

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

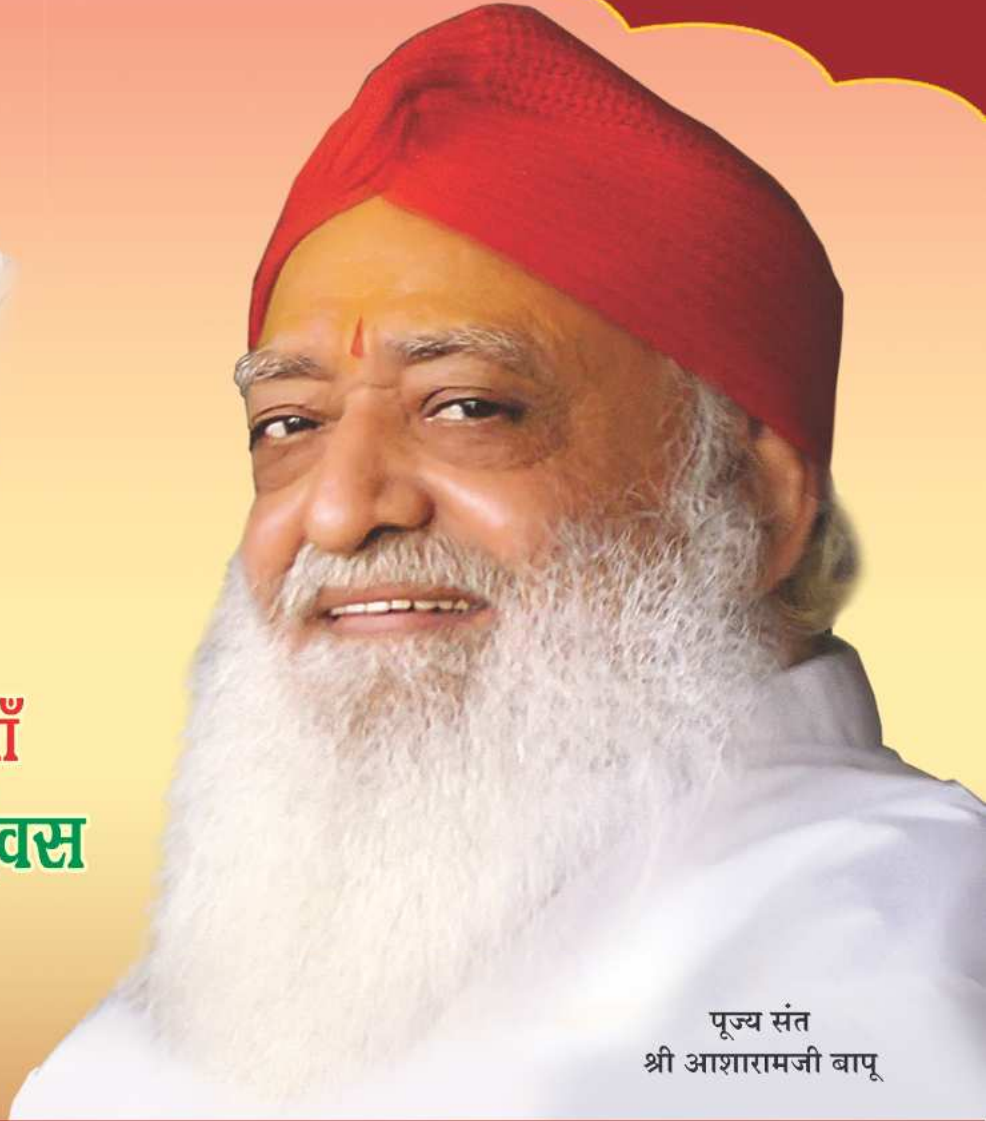
ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ सितम्बर २०१८
वर्ष : २८ अंक : ३
(निरंतर अंक : ३०९)
पृष्ठ संख्या : ३६
(आवरण पृष्ठ सहित)



पूज्य बापूजी के सद्गुरु भगवत्पाद
साँई श्री लीलाशाहजी महाराज

पूज्य बापूजी का ५५वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस १० अक्टूबर



पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

लाखों-लाखों जन्मों के माता-पिता जो न दे सके, वह मेरे परम पिता गुरुदेव ने मुझे हँसते-खेलते दे दिया। मुझे घर में ही घर बता दिया। हे अविद्या को विदीर्ण करनेवाले, जन्म-मृत्यु की शृंखला से मुक्त करनेवाले मेरे गुरुदेव ! हे मेरे तारणहार ! आपकी जय-जयकार हो ! - पूज्य बापूजी



विजयी होने का संदेश देती है विजयादशमी

दशहरा : १८ व १९ अक्टूबर १२



श्राद्ध से मनोकामनापूर्ति एवं परमात्मप्राप्ति १३

श्राद्ध पक्ष : २४ सितम्बर से ८ अक्टूबर



पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न अटलजी के उद्गार ६

जानिये तृण धान्य के स्वास्थ्यहितकारी गुण ! ३०



ॐ पूज्य बापूजी का पावन संदेश

ऋग्वेद का वचन है, उसे पक्का करें : युष्माकम् अन्तरं बभूव । नीहारेण प्रावृता...

‘वह सृष्टिकर्ता आत्मदेव तुम्हारे भीतर ही है और अज्ञानरूपी कोहरे से ढका है।’

हे मनुष्यो ! अपना असली खजाना अपने पास है । जहाँ कोई दुःख नहीं, कोई शोक नहीं, कोई भय नहीं ऐसा खजाना तो अपने आत्मदेव में है । तुम (अज्ञानरूपी कोहरे को हटाकर) अपने चेतनरूप, आनंदरूप परमात्मस्वभाव को जान लो और यह मनुष्य-जीवन उसीके लिए मिला है । श्रीकृष्ण ने कहा : अद्वेष्टा सर्वभूतानाम्... किसीसे भी अपने मन में द्वेष न रखो । अगर अपना कल्याण चाहते हो, अपना हित चाहते हो, अपनी महानता जगाना चाहते हो, भय को मिटाना चाहते हो तो अद्वेष्टा सर्वभूतानाम्... किसीसे भी द्वेष नहीं करो । तो क्या करें ?

बोले, जो श्रेष्ठजन हैं, महापुरुष हैं, जो सत्यनिष्ठ हैं, ईश्वर की तरफ जा रहे हैं, समाज की भलाई में लगे हैं उनसे मैत्री करो और जो तुम्हारे से छोटे हैं, तुम ऑफिसर हो या सेठ हो या घर के बड़े हो तो छोटों पर करुणा करो । उनकी गलती-बलती होगी लेकिन उनको स्नेह दे के उन्नत करो । मैत्री करो, करुणा तो करो लेकिन ‘यह मेरा बेटा है, यह मेरा फलाना है...’ श्रीकृष्ण बोलते हैं - नहीं, कोहरा हटेगा नहीं । निर्ममो... ममता न रखो, निरहङ्कारः... अहंकार भी मत करो शरीर में, वस्तुओं में क्योंकि तुम्हारा शरीर पहले था नहीं, बाद में रहेगा नहीं, अभी भी नहीं की तरफ जा रहा है । तो अहंकार करोगे तो कोहरा होगा । निर्ममो निरहङ्कारः...

श्रीकृष्ण ने बहुत ऊँची बात कह दी : समदुःखसुखः क्षमी । दुःख आ जाय तो उद्विग्न न हो जाओ, सुख आ जाय तो उसमें फँसो मत ।

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च । निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी ॥ (गीता : १२.१३)

यह करेंगे तो आप कोहरे के पार अपने सुखरूप, ज्ञानरूप, चैतन्यरूप आत्मवैभव को पाने में सफल हो जाओगे ।

यह बात रामायण ने अपने ढंग से कही । जो सत्संग करता है और ईश्वर की तरफ यात्रा करता है, ‘मेढत कठिन कुअंक भाल के...’ उसके भाग्य के कुअंक मिट जाते हैं । ‘प्रारब्ध में ऐसा लिखा है, वैसा लिखा है...’ लेकिन व्यक्ति इस रास्ते चलता है तो प्रारब्ध के दुःखद दिन भी उसको चोट नहीं पहुँचा सकते । व्यवहारकाल में भले रामजी राज्य छोड़ के वन गये, ‘हाय सीते !... हाय भैया लक्ष्मण !...’ किया लेकिन अंदर में दुःख नहीं हुआ । गांधीजी कई बार अंग्रेजों के कुचक्र के शिकार हुए लेकिन भीतर दुःखी नहीं हुए । क्यों ? कि ‘मैं जो भी काम कर रहा हूँ, मेरे राम की प्रसन्नता के लिए, ज्ञान के लिए कर रहा हूँ ।’ उनका उद्देश्य भारतवासियों में और सबमें बसे हुए रामस्वरूप को पहचानने का था । सुबह-शाम प्रार्थना भी करते और शांत भी होते । तो अपने जीवन में उतार-चढ़ाव आयें तो अशांत नहीं होना और राग-द्वेष में फँसना नहीं है । आत्मवैभव को हम पहचानेंगे । इसका सरल उपाय है कि रात को सोते समय ‘हे परमात्मा ! तुम मेरे अंतरात्मा हो, मैं तुम्हारा हूँ ।’ जैसे पिता को, माता को बोलते हैं न, कि ‘मैं तुम्हारा हूँ’ तो उनका हृदय खिलता है, ऐसे ही आत्मदेव प्रसन्न होंगे । ठीक है ?

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओडिया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २८ अंक : ३ मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३०९
प्रकाशन दिनांक : १ सितम्बर २०१८
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
भाद्रपद-आश्विन वि.सं. २०७५

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम,
मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैनुफेक्चर्स, कुंजा मतरालियों,
पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व
न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष,
मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैनुफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactures) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम,
संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२
Email : ashramindia@ashram.org
Website : www.ashram.org,
www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
वार्षिक	₹ ६५	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US \$ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US \$ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US \$ 80

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस अंक में...

- ❖ पूज्य बापूजी का पावन संदेश २
- ❖ गुरु संदेश * ऐसा वैभव है आत्मदेव का ! ४
- ❖ आप कहते हैं * पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न अटलजी के उद्गार ६
- ❖ इच्छामात्र छोड़ो, आनंद-ब्रह्मानुभूति करो - स्वामी अखंडानंदजी ७
- ❖ भक्ति सुधा * ...भक्ति को कैसे पुष्ट करते हैं भगवान व गुरु ! ८
- ❖ गीता अमृत * मोहरूप दलदल से पार हो जाओ ९
- ❖ शास्त्र प्रसंग * रामजी का न्याय व उदारता तथा प्रजा को सीख ११
- ❖ पर्व मांगल्य * विजयी होने का संदेश देती है विजयादशमी १२
- ❖ गांधीजी की भगवन्नाम-निष्ठा १२
- ❖ श्राद्ध से मनोकामनापूर्ति एवं परमात्मप्राप्ति १३
- ❖ प्रेरक प्रसंग * पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग १४
- ❖ ऋषि ज्ञान प्रसाद * दरिद्रता कैसे मिटे और 'पृथ्वी के देव' कौन ? १६
- ❖ योग-वेदांत-सेवा * संगठन की मजबूती के स्वर्णिम सूत्र १७
- ❖ सेवा का उद्देश्य क्या है ? १७
- ❖ विद्यार्थी संस्कार * तो काम-धंधा व पढ़ाई-लिखाई भी मस्त १८
- ❖ तेजस्वी युवा * शक्ति का अपव्यय व संरक्षण कैसे ? १९
- ❖ महिला उत्थान * एक आदर्श नारी, जिनका सम्पूर्ण जीवन है... २१
- ❖ विवेक जागृति * पहले साइंस या पहले ईश्वर ? २२
- ❖ प्रसंग प्रवाह * कैसी अद्वैतनिष्ठा होती है महापुरुषों की ! २३
- ❖ तत्त्व विचार * नित्य प्राप्त होने पर भी जो ज्ञात नहीं ! २४
- ❖ वैराग्य शतक * मन अपना समुझाया ले ! २५
- ❖ संतों की हितभरी अनुभव-वाणी * महावीर स्वामी २६
 - * सूफी संत मौलाना जलालुद्दीन रुमी
 - * संत निपट निरंजनजी
 - * संत एकनाथजी
 - * भक्त साँवता माली
 - * संत कबीरजी
 - * स्वामी विवेकानंदजी
- ❖ गौ महिमा * पायें देशी गायों से उनके रंगानुसार विशेष लाभ २७
- ❖ जीवन जीने की कला * मंत्रजप साधना २८
- ❖ व्रत-निष्ठा * दुर्गुणों को मिटाने में कैसे हों सफल ? २९
- ❖ शरीर स्वास्थ्य * जानिये तृण धान्य के स्वास्थ्यहितकारी गुण ! ३०
 - * बुखार को बुखार हो जाय
 - * बुखार को मिटाने का दैवी उपाय
- ❖ भक्तों के जीवन-अनुभव व अडिग निष्ठा ! - धर्मन्द्र गुप्ता ३२
- ❖ सुखमय जीवन की अनमोल कुंजियाँ ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग



Download
Rishi Prasad
Official, Rishi
Darshan &
Mangalmai
Official Apps

रोज सुबह ७-०० बजे

रोज रात्रि १०-०० बजे

www.ashram.org/live

- * 'साधना प्लस न्यूज' चैनल टाटा स्काई (चैनल नं. ५४०), डिश टीवी (चैनल नं. ६७९), सिलायंस डिजिटल टीवी (चैनल नं. ४३१), बिहार में मौर्या सिटी (चैनल नं. ३११), राँची में जीटीपीएल व डेन केबल पर तथा 'JioTV' एन्ड्रोइड एप पर उपलब्ध है।
- * 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है।

आप
कहते हैं

पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न अटलजी के उद्गार

पूज्य बापूजी के भक्तिरस में डूबे हुए श्रोता भाई-बहनो !

मैं यहाँ पर (पूज्य बापूजी के लखनऊ सत्संग-समारोह में) पूज्य बापूजी का अभिनंदन करने आया हूँ... उनका आशीर्वचन सुनने आया हूँ... भाषण देने या बकबक करने नहीं

आया हूँ। बकबक तो हम करते रहते हैं। बापूजी का जैसा प्रवचन है, कथा-अमृत है, उस तक पहुँचने के लिए बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। मैंने पहले उनके दर्शन पानीपत में

किये थे। वहीं पर रात को पानीपत में पुण्य-प्रवचन समाप्त होते ही बापूजी कुटीर में जा रहे थे, तब उन्होंने मुझे बुलाया। मैं भी उनके दर्शन और आशीर्वाद के लिए लालायित था। संत-महात्माओं के दर्शन तभी होते हैं, उनका सान्निध्य तभी मिलता है जब कोई पुण्य जागृत होता है।

इस जन्म में मैंने कोई पुण्य किया हो इसका मेरे पास कोई हिसाब तो नहीं है किंतु जरूर यह पूर्वजन्म के पुण्यों का ही फल है जो बापूजी के दर्शन हुए। उस दिन बापूजी ने जो कहा, वह अभी तक मेरे हृदय-पटल पर अंकित है। देशभर की परिक्रमा करते हुए जन-जन के मन में अच्छे संस्कार जगाना, यह एक ऐसा परम राष्ट्रीय कर्तव्य है, जिसने हमारे देश को आज तक जीवित रखा है और इसके बल पर हम उज्ज्वल भविष्य का सपना देख रहे हैं... उस सपने को साकार करने की शक्ति-भक्ति एकत्र कर रहे हैं।

पूज्य बापूजी सारे देश में भ्रमण करके जागरण का शंखनाद कर रहे हैं, संस्कार दे रहे हैं। हमारी जो प्राचीन

धरोहर थी और जिसे हम लगभग भूलने का पाप कर बैठे थे, बापूजी हमारी आँखों में ज्ञान का अंजन लगाकर उसको फिर से हमारे सामने रख रहे हैं। बापूजी ने कहा कि ईश्वर की कृपा से कण-कण में व्याप्त एक महान शक्ति के प्रभाव से जो कुछ घटित होता है, उसकी छानबीन और उस पर अनुसंधान करना चाहिए।

शुद्ध अंतःकरण से निकली हुई प्रार्थना को प्रभु अस्वीकार नहीं करते, यह हमारा विश्वास होना चाहिए। यदि अस्वीकार हो तो प्रभु को दोष देने के

बजाय यह सोचना चाहिए कि क्या हमारे अंतःकरण में उतनी शुद्धि है जितनी होनी चाहिए? शुद्धि का काम राजनीति नहीं कर सकती, अशुद्धि का काम भले कर सकती है। पूज्य बापूजी ने कहा कि जीवन के व्यापार में से थोड़ा समय निकालकर सत्संग में आना चाहिए। पूज्य बापूजी उज्जैन में थे तब मेरी जाने की बहुत इच्छा थी लेकिन कहते हैं न, कि दाने-दाने पर खानेवाले की मोहर होती है, वैसे ही संत-दर्शन के लिए भी कोई मुहूर्त होता है। आज यह मुहूर्त आ गया है। यह मेरा क्षेत्र है। पूज्य बापूजी ने चुनाव जीतने का तरीका भी बता दिया है।

आज देश की दशा ठीक नहीं है। बापूजी का प्रवचन सुनकर बड़ा बल मिला है। हाल में हुए लोकसभा अधिवेशन के कारण थोड़ी-बहुत निराशा पैदा हुई थी किंतु रात को लखनऊ में पुण्य-प्रवचन सुनते ही वह निराशा भी आज दूर हो गयी। बापूजी ने मानव-जीवन के चरम लक्ष्य मुक्ति-शक्ति की प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ चतुष्टय, भक्ति के लिए समर्पण की भावना



तथा ज्ञान, भक्ति और कर्म - तीनों का उल्लेख किया है। भक्ति में अहंकार का कोई स्थान नहीं है। ज्ञान अभिमान पैदा करता है। भक्ति में पूर्ण समर्पण होता है। १३ दिन के शासनकाल के बाद मैंने कहा : 'मेरा जो कुछ है, तेरा है।' यह तो बापूजी की कृपा है कि श्रोता को वक्ता बना दिया और वक्ता को नीचे से ऊपर चढ़ा दिया। जहाँ तक ऊपर चढ़ाया है वहाँ तक ऊपर बना रहूँ इसकी चिंता भी बापूजी को करनी पड़ेगी।

(और यह बात जगजाहिर है कि इसके बाद अटलजी पहले १३ महीने और फिर ४.५ साल तक प्रधानमंत्री पद पर रहे।)

राजनीति की राह बड़ी रपटीली है। जब नेता गिरता है तो यह नहीं कहता कि मैं गिर गया बल्कि कहता है : 'हर हर गंगे।' बापूजी का प्रवचन सुनकर बड़ा आनंद आया। मैं लोकसभा का सदस्य होने के नाते अपनी ओर से एवं लखनऊ की जनता की ओर से बापूजी के चरणों में विनम्र होकर नमन करना चाहता हूँ। उनका आशीर्वाद हमें मिलता रहे, उनके आशीर्वाद से प्रेरणा पाकर बल प्राप्त करके हम कर्तव्य के पथ पर निरंतर चलते हुए परम वैभव (आत्मसाक्षात्कार) को प्राप्त करें, यही प्रभु से प्रार्थना है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न : आत्मसाक्षात्कार के लिए कितनी माला करनी पड़ती हैं ?

पूज्य बापूजी : 'करनी पड़ती है...' तो बोझा है, फिर नहीं होगा, चाहे कितनी भी माला कर डालो। माला ऐसे हो कि होने लग जाय। 'करनी पड़ती है...' तो फिर मुझे लगता है कि १२० मालाएँ रोज करने का विधान है लेकिन 'इतनी माला करने के बाद मेरे को ईश्वर मिलेगा' यह बना रहा तो नहीं मिलेगा। साधन के बल से नहीं मिलेगा। साधन करते-करते ईश्वर की कृपा उसमें आवश्यक है। यह भी तो आता है रामायण में :

यह गुण साधन तें नहिं होई।

इच्छामात्र छोड़ो और आनंद-ब्रह्मानुभूति करो

- स्वामी अखंडानंदजी सरस्वती

मैं एक दिन ऋषिकेश में स्वर्गाश्रम में गंगा-किनारे बैठा था। एक मित्र मेरे पास आकर बैठ गया और बोला : "स्वामीजी ! संसार में किसीसे मेरी आसक्ति नहीं है। मुझे आनंद चाहिए। इसके लिए आप जो आज्ञा करोगे, मैं वही करूँगा। यदि आप कहोगे तो विवाह भी कर सकता हूँ और आपके कहने पर शरीर भी छोड़ सकता हूँ।"

मैंने पूछा : "ईमानदारी से कहते हो ?"

"स्वामीजी ! पूरी ईमानदारी से।"

"यह आनंद पाने की इच्छा छोड़ दो !"

"छोड़ दी।" अचानक उसके शरीर में कम्प हुआ। नेत्रों से टपाटप आँसू गिरने लगे। रोमांच हुआ। शरीर में चमक आयी। वह समाधिस्थ हो गया। उठने पर बोला : "मैं समझ गया कि आनंद कैसा होता है।"

नारायण ! नित्यप्राप्त शुद्ध-बुद्ध-मुक्त आत्मस्वरूप को त्यागकर अप्राप्त अनात्मवस्तु को चाहने का नाम ही मृत्यु है। यही असत्-अचित्-दुःख है। हमारे मन में प्राप्त वस्तु का तिरस्कार करके अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति का जो संकल्प है, वही हमारे जीवन को दुःखी-अज्ञानी-जड़ बनाये हुए है। अपने आनंदस्वरूप पर इच्छा का पर्दा है। इच्छाएँ ही आनंद की आच्छादिका (ढक्कनेवाली) हैं। इच्छामात्र छोड़ो और आनंद-ब्रह्मानुभूति करो।

गीता
अमृत

मोहरूप दलदल से पार हो जाओ

- पूज्य बापूजी



भगवान गीता (२.५२) में कहते हैं :

यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ।

तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥

जब तुम्हारी बुद्धि मोहरूपी (अज्ञानरूपी) दलदल से भली प्रकार पार हो जायेगी तब तुम सुने हुए और सुनने में आनेवाले इस लोक और परलोक संबंधी सभी भोगों से उपराम हो जाओगे और परम पद में ठहर जाओगे।

दलदल में पहले आदमी का पैर धँस जाता है फिर घुटने, जाँघें, नाभि, फिर छाती, फिर पूरा शरीर धँस जाता है। ऐसे ही संसार की दलदल में आदमी धँसता है - 'थोड़ा-सा यह कर लूँ, यह देख लूँ, थोड़ा-सा यह खा लूँ, यह सुन लूँ...'। प्रारम्भ में बीड़ी पीनेवाला जरा-सी फूँक मारता है, फिर व्यसन में पूरा बँधता है। शराब पीनेवाला पहले जरा-सा घूँट पीता है, फिर पूरा शराबी हो जाता है। ऐसे ही ममता के बंधनवाले ममता में फँस जाते हैं। 'जरा शरीर का खयाल करें, जरा कुटुम्बियों का खयाल करें...'। जरा-जरा करते-करते बुद्धि संसार के खयालों से भर जाती है। जिस बुद्धि में परमात्मा का ज्ञान होना चाहिए, परमात्मशांति भरनी चाहिए, उस बुद्धि में संसार का कचरा भरा हुआ है। सोते हैं तो भी संसार याद आता है, चलते हैं तो भी संसार याद आता है, जीते हैं तो संसार याद आता है और मरते हैं तो भी संसार ही याद आता है।

सुना हुआ है स्वर्ग और नरक के बारे में, सुना हुआ

है भगवान के बारे में। यदि बुद्धि में से मोह हट जाय तो स्वर्ग आदि का मोह नहीं होगा, सुने हुए भोग्य पदार्थों का मोह नहीं होगा। मोह की निवृत्ति होने पर बुद्धि परमात्मा के सिवाय किसीमें भी नहीं ठहरेगी। परमात्मा के सिवाय कहीं भी बुद्धि ठहरती है तो समझ लेना कि अभी अज्ञान जारी है। अहमदाबादवाला कहता है कि 'मुंबई में सुख है।' मुंबईवाला कहता है कि 'कोलकाता में सुख है।' कोलकातावाला कहता है कि 'कश्मीर में सुख है।' कश्मीरवाला कहता है कि 'शादी में सुख है।' शादीवाला कहता है कि 'बाल-बच्चों में सुख है।' बाल-बच्चोंवाला कहता है कि 'निवृत्ति में सुख है।' निवृत्तिवाला कहता है कि 'प्रवृत्ति में सुख है।' मोह से भरी हुई बुद्धि अनेक रंग बदलती है। अनेक रंग बदलने के साथ अनेक-अनेक जन्मों में भी ले जाती है।

जब तक बुद्धि में मोह (अज्ञान) का प्रभाव है तब तक जीव बंधन और दुःखों का शिकार बनता है। जितने अंश में मोह प्रगाढ़ है उतने अंश में वह दुःखद योनियों में और दुःखद अवस्थाओं में भ्रमित होकर दुःख भोगता है।

संत तुलसीदासजी ने कहा है :

मोह सकल व्याधिन्ह कर मूला ।

तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला ॥

मोह सब व्याधियों का मूल है। उसीसे (जन्म-मरण आदि रूपी महादुःख के) अनेक शूल उत्पन्न होते हैं।

उस सच्चिदानंद परब्रह्म-परमात्मा के अनुभव के बिना मोह जाता नहीं और मोह गये बिना अनुभव होता



विद्यार्थी संस्कार



तो व्यवहार, काम-धंधा व पढ़ाई-लिखाई भी मस्त होगी

- पूज्य बापूजी

(पिछले अंक में हमने पूज्यश्री की अमृतवाणी द्वारा जाना कि किस प्रकार ईश्वर में मन लगाकर पढ़ने से पढ़ाई में मन लगना बड़ा आसान हो जायेगा । अब प्रस्तुत हैं ईश्वर में मन लगाने की सरल, सचोट तरकीबें :)

(१) रोज थोड़ी देर सब भूलकर भगवान में बैठने का, मन लगाने का अभ्यास करो । 'हरि... ॐ...' उच्चारण करो तो हरि के 'ह' और ॐ के 'म' के बीच का जो संधिकाल है, उसमें मन ईश्वर के सिवाय कहीं नहीं जायेगा । दीया जला दो । जैसे बघार करते हैं तो अग्नि के संयोग से राई की सुगंध कई गुना हो जाती है और दूर तक जाती है, ऐसे ही अग्नि का संयोग मिलने से जप-तप, ध्यान का प्रभाव अनेक गुना हो जाता है । इसलिए साधना के समय अग्नि, धूप आदि से हवन किया जाता है । गौ-चंदन धूपबत्ती के धूप जैसा सात्विक धूप हो, थोड़े प्राणायाम हों और फिर यह (उपरोक्त) ध्वनि हो तो ईश्वर में मन लगाने में बड़ी मदद मिलेगी । (गौ-चंदन धूपबत्ती संत श्री आशारामजी आश्रम व समिति के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध है । - संकलक)

(२) मन न लगे तो ईश्वर को पुकारो । कभी थोड़ा कीर्तन करो, कभी जप करो, कभी शास्त्र पढ़ो, कभी नाचो, कभी हँसो, ईश्वर के लिए कभी रोओ - 'कब पाऊँ, तुझे कैसे रिझाऊँ ?... तू दूर नहीं, दुर्लभ नहीं, परे नहीं, पराया नहीं । हे मेरे प्रभु ! हे मेरे अंतरात्मा ! हे सर्वेश्वर ! हे परमेश्वर ! हे विश्वेश्वर ! हे दीन दयाल बिरिदु संभारी, हरहु नाथ मम अज्ञानता भारी ! हे हरि !... हे हरि !... हे राम ! हे गोविंद !... हे गोपाल, दीनदयाल !... ' दीनभाव से,

आर्तभाव से या प्रेमभाव से - किसी भी भाव से हृदय को भगवान के लिए द्रवित कर दे । 'संसारी मोह-ममता के लिए हृदय द्रवित होता है तो बंधन बढ़ता है, तेरे लिए द्रवित हो तो तेरे अमृत-अनुभव में एक हो जाय... ॐ... ॐ... ॐ... ।' ऐसे भिन्न-भिन्न तरकीबों से ईश्वर में मन एक बार लग जाय, रसास्वाद आ जाय बस, फिर गाड़ी चल पड़ेगी ।

ईश्वर के सिवाय कहीं भी मन लगाया तो अंत में रोना ही पड़ेगा । तो पढ़ाई में मन लगायें कि नहीं लगायें ? ईश्वर में मन लगा के फिर पढ़ो । ईश्वर में मन लगाकर फिर कर्तव्य करो तो कर्तव्य भी ईश्वर की पूजा हो जायेगा ।

(३) सुबह उठो, थोड़ी देर ईश्वर में शांत रहो ।

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्मतत्त्वं

सच्चित्सुखं परमहंसगतिं तुरीयम् ।

यत्स्वप्नजागरसुषुप्तिमवैति नित्यं

तद्ब्रह्म निष्कलमहं न च भूतसङ्घः ॥

'मैं प्रातःकाल हृदय में स्फुरित होते हुए आत्मतत्त्व का स्मरण करता हूँ, जो सत्, चित् और आनंदस्वरूप है, परमहंसों का प्राप्य स्थान है और जाग्रत आदि तीनों अवस्थाओं से विलक्षण 'तुरीय' है । जो स्वप्न, सुषुप्ति और जाग्रत अवस्था को नित्य जानता है, वह स्फुरणरहित ब्रह्म ही मैं हूँ; पंचभूतों का संघात (शरीर) मैं नहीं हूँ ।'

'प्रातःकाल मैं उस परमेश्वर का चिंतन करता हूँ जो हृदय में स्फुरित हुआ है, जिसके आगे से जाग्रत आ के चला गया फिर भी जो नहीं गया, स्वप्न आ के चला गया, गहरी नींद आ के चली गयी फिर भी जो नहीं गया और जो सदा मेरे साथ है ।

संतों की हितभरी अनुभव-वाणी

शिष्य का कर्तव्य



– महावीर स्वामी

शिष्य का कर्तव्य है कि वह जिन गुरु से धर्म-प्रवचन सीखे, उनकी निरंतर भक्ति करे। मस्तक पर अंजलि चढ़ाकर (दोनों हाथ जोड़ के) गुरु के प्रति सम्मान प्रकट करे। जिस तरह भी हो सके - मन से, वचन से और शरीर से हमेशा गुरु की सेवा करे।

मन शुद्ध कर आत्मसाक्षात्कार करो



– सूफी संत मौलाना जलालुद्दीन रुमी

हे मनुष्य ! तू जानता है कि तेरा दर्पणरूपी मन क्यों साफ नहीं है ? देख, इसलिए साफ नहीं कि उसके मुख पर जंग-सा मैल लगा हुआ है। मन को शुद्ध करो और आत्मा का साक्षात्कार करो।



संगत साधुन की करिये

– संत निपट निरंजनजी

संगत साधुन की करिये, कपटी लोगन सों डरिये।
कौन नफा दुरजन की संगत,

हाय-हाय करि मरिये ॥

बानी मधुर सरस मुख बोलत^१,

अवस^२ सुनिय भव तरिये।

‘निरंजन’ प्रभु अंतर निरमल, हीये भेद बिसरिये ॥^३

१. संतजन कल्याणकारी मधुर, रसप्रद वाणी बोलते हैं २. अवश्य ३. सबके अंतर में निर्मल परमात्मा हैं अतः हृदय की भेद-भावना को त्याग दीजिये।

वेद और शास्त्र भी यही कहते हैं



– संत एकनाथजी

श्री सद्गुरु स्वामी के पावन चरणकमलों की नित्य वंदना करनी चाहिए। अन्य सभी साधन (उपाय) छोड़कर केवल उनकी अनन्य भक्ति करनी चाहिए। वेद-शास्त्र भी यही कहते हैं कि गुरुचरणों के सिवाय कुछ भी नहीं मानें अर्थात् अपने गुरुदेव के प्रति एकनिष्ठ रहें। संत एकनाथजी कहते हैं कि जो शिष्य सर्वभाव (तन-मन-धन) से गुरुचरणों की सेवा (गुरुदेव का दैवी कार्य) करता है, वह भगवान का प्रिय हो जाता है।



भगवन्नाम का बल

– भक्त साँवता माली

भगवन्नाम का ऐसा बल है कि मैं किसीसे भी नहीं डरता और कलिकाल के सिर पर डंडे जमाया करता हूँ।



सद्गुरु के अनंत

उपकार – संत कबीरजी

सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावणहार ॥

‘सद्गुरु की महिमा अनंत है। उन्होंने अनंत उपकार किये हैं। उन्होंने मेरे अनंत लोचन खोलकर मुझे असीम ब्रह्म की अनुभूति करवायी है।’



बिना पढ़े पंडित

– स्वामी विवेकानंदजी

गुरु की कृपा से शिष्य बिना ग्रंथ पढ़े ही पंडित (विद्वान) हो जाता है।

भक्तों के जीवन-अनुभव व अडिग निष्ठा !

अहमदाबाद एवं सूरत आश्रमों में गुरुपूर्णिमा पर्व एवं बालिका अनुष्ठान शिविर, अहमदाबाद के अवसर पर प्राप्त जन-प्रतिक्रियाएँ :



रामप्रसाद भगत, नेपाल :

गुरुपूनम पर्व मनाने हेतु मेरे साथ करीब ३६ लोग नेपाल से यहाँ (अहमदाबाद आश्रम) आये हैं। सभीके हृदय में पूज्य बापूजी के प्रति अभूतपूर्व भाव व समर्पण है। हम लोग समूह बनाकर गुरुदेव के शीघ्र आगमन के लिए प्रार्थना करते हैं।



प्रकाश रावल, दुबई :

हम दुबई से हर साल उत्तरायण या गुरुपूनम पर अहमदाबाद आश्रम आते हैं। पहले नौकरी करते थे, जितनी पगार नहीं थी उतना खर्चा था। पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा लेने के बाद खुद की ३ दुकानें हो गयीं।



अशोक कुमार मिश्र, नेपाल :

पहले मुझे खैनी, सिगरेट, दारू, मांस आदि के खान-पान का व्यसन था। पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा लेने के बाद मेरे सारे व्यसन छूट गये। गुरुदेव के जिस अमृत-उपदेश से मेरा अंतःकरण पवित्र हुआ है और होता जा रहा है, उस प्रसाद को मैं 'ऋषि प्रसाद' के माध्यम से अन्य लोगों तक पहुँचाने की सेवा करता हूँ।



स्वाती, म्यांमार :

बापूजी पर लगाये गये आरोप गलत हैं। ऊपरी अदालत से जरूर सही फैसला आयेगा। महिला-सुरक्षा के जितने कानून बनाये गये हैं, उनका बहुत ज्यादा दुरुपयोग हो रहा है। इसलिए कानून में परिवर्तन होना चाहिए।



निर्मला मिश्र, नेपाल :

मैं नेपाल सरकार के महिला एवं बाल विकास विभाग में अधिकृत हूँ। जिन्होंने बापूजी से दीक्षा नहीं ली है वे भी आँसू बहाते हुए कहते हैं कि 'आपके बापूजी निर्दोष हैं।'।



श्री विष्णु पटेल, कपड़ा

उद्योगपति, सूरत : बापूजी ने हमें जो ज्ञान दिया है, उससे हमारे जीवन में जो शांति है, आनंद है वह हमें कहीं नहीं मिलता। कोई कुछ भी फैसला दे, लोग कुछ भी बोलें परंतु हमें सच्चाई पता है। हमारे बापूजी हमारे लिए भगवान हैं।



गायत्री भट्ट, सागवाड़ा

(राज.) : यह सिर्फ बापूजी पर नहीं, हमारी पूरी संस्कृति पर वार हुआ है। जिनकी ओर मैं जानेमात्र से विकार शांत हो जाते हैं, काम जिनके आगे हथियार फेंक देता है ऐसे संत पर इस प्रकार के आरोप लगाये गये हैं, हम इन आरोपों को नहीं मानते।



किरीट मंगलोरिया, वराछा,

जि. सूरत : १९९७ में मैंने एक मैगजीन देखी, उसमें बापूजी व आश्रम के बारे में गलत बातें लिखी हुई थीं। मैं सच्चाई जानने के लिए आश्रम आया। आश्रम की गतिविधियाँ, सेवाएँ देखीं, बापूजी का सत्संग सुना तो मैं यहाँ जुड़ गया। बापूजी से मंत्रदीक्षा लेने के पहले मैं तम्बाकू, सुपारी, अंडे और न जाने क्या-क्या खाता था। मैं बापूजी से कभी करीब से मिला नहीं, केवल उनके दूर से ही दर्शन किये और मेरे कितने सारे दुर्गुण चले गये। दोषमुक्त करनेवाले भला दोषी कैसे हो सकते हैं ! पॉक्सो एक्ट में संशोधन करना चाहिए।



कुलदीप पाटीदार,
पी.डब्लू.डी. कॉन्ट्रैक्टर, मनावर
(म.प्र.) : आज हमारे निर्दोष संत

पिछले ५ वर्षों से जेल में हैं। आज भी यदि गरीब क्षेत्रों के बापूजी के आश्रमों में मीडिया चलकर देखे कि वहाँ क्या सेवाकार्य हो रहे हैं तो मीडिया और पूरे भारत की जनता की आँख खुल जायेगी। उन क्षेत्रों में जितने गरीब, वृद्ध और अशक्त लोग हैं वे बापूजी के आश्रमों में सुबह १० बजे आते हैं, भजन करते हैं, दोपहर में भोजन पाते हैं, थोड़ा आराम करते हैं, फिर विडियो सत्संग देखते हैं, कीर्तन करते हैं और शाम को पैसे लेकर घर जाते हैं। इससे बड़ा दैवी कार्य क्या हो सकता है ?



कृपा पांचाल, भरुच (गुज.) :

बापूजी एक ब्रह्मज्ञानी संत हैं। वे हम जैसी बच्चियों को सिखा रहे हैं कि आज आधुनिक फैशन के नाम पर जो भी सब चल रहा है, ऐसे विपरीत समय में उसके सामने हम कैसे खड़े रहें, अपना संयम, चरित्र-बल कैसे बढ़ायें, ब्रह्मचर्य कैसे पालें। बापूजी भारतीय संस्कृति को बचाने के लिए, नारी-शक्ति को जगाने के लिए कितना प्रयत्न करते हैं !

दिशा पटेल, बारडोली (गुज.) :

रोशनी देकर गुम हो जाना कोई दीपक से सीखे ।
चाँदनी देकर छुप जाना कोई चाँद से सीखे ॥

दर्द देकर गुम हो जाना

कोई दुनिया के स्वार्थी लोगों से सीखे ।

लेकिन सब कुछ देकर कुछ न चाहना

यह हमारे बापूजी से सीखे ॥



जिन्होंने समाज के लिए अपना पूरा जीवन लगाया, ऐसे संत के साथ जो भी हुआ वह ठीक नहीं है। मेरा सरकार से यही अनुरोध है कि हमारी भी आवाज सुनो !
(संकलक : धर्मेन्द्र गुप्ता)

पुण्यदायी तिथियाँ

४ अक्टूबर : गुरुपुष्यामृत योग (सूर्योदय से रात्रि ८-४९ तक)

५ अक्टूबर : इंदिरा एकादशी (बड़े-बड़े पापों का नाशक तथा नीच योनि में पड़े हुए पितरों को भी सद्गति देनेवाला व्रत)

८ अक्टूबर : सोमवती अमावस्या (दोपहर ११-३२ से ९ अक्टूबर सूर्योदय तक) (इस दिन तुलसी की १०८ परिक्रमा करने से दरिद्रता मिटती है।)

१० अक्टूबर : पूज्य बापूजी का ५५वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस

१७ अक्टूबर : बुधवारी अष्टमी (सूर्योदय से दोपहर १२-५० तक), संक्रांति (पुण्यकाल : दोपहर १२-२४ से सूर्यास्त तक)

१८ अक्टूबर : दशहरा, विजयादशमी (पूरा दिन शुभ मुहूर्त), संकल्प, शुभारम्भ, नूतन कार्य, सीमोल्लंघन के लिए विजय मुहूर्त (दोपहर २-२० से ३-०७ तक), गुरु-पूजन, अस्त्र-शस्त्र-शमी वृक्ष-आयुध-वाहन पूजन

१९ अक्टूबर : दशहरा



२० अक्टूबर : पापांकुशा एकादशी (इस दिन उपवास करने से कभी यम-यातना नहीं प्राप्त होती। यह स्वर्ग, मोक्ष, आरोग्य, सुंदर स्त्री, धन एवं मित्र प्रदायक तथा माता, पिता व स्त्री के पक्ष की १०-१० पीढ़ियों का उद्धार कर देनेवाला व्रत है।)
(अधिक जानकारी आश्रम के कैलेंडर व डायरी में पायें।)

सूर्य-चन्द्रकिरणों से पुष्ट गुलकंद

सूर्य एवं चन्द्र की किरणों में रखकर पुष्ट किया हुआ यह गुलकंद मधुर व शीतल है तथा मन को आह्लाद और हृदय व मस्तिष्क को ठंडक पहुँचाता है। अम्लपित्त (hyperacidity), आंतरिक गर्मी, प्यास की अधिकता एवं हाथ-पैर, तलवों व आँखों में जलन, घमौरियाँ, मूत्रदाह, नाक व मल-मूत्र के मार्ग से होनेवाला रक्तस्राव, अधिक मासिक स्राव जैसी पित्तजनित व्याधियों में विशेष लाभदायी है। रक्ताल्पता (anaemia), कब्ज आदि तकलीफों में भी इसका सेवन अत्यंत लाभकारी है। यह पेट के अल्सर व आँतों की सूजन को दूर करने में मदद करता है।



शुद्ध स्वर्णभस्मयुक्त सुवर्णप्राश टेबलेट



ये गोлияँ बालकों के बौद्धिक, मानसिक तथा शारीरिक विकास के लिए अत्यंत उपयुक्त हैं। ये आयु, शक्ति, मेधा, बुद्धि, कांति व जठराग्नि वर्धक तथा उत्तम गर्भपोषक हैं। गर्भवती महिला इनका सेवन करके निरोगी, तेजस्वी, मेधावी संतान को जन्म दे सकती है। विद्यार्थी भी धारणाशक्ति, स्मरणशक्ति तथा शारीरिक शक्ति बढ़ाने के लिए इनका उपयोग कर सकते हैं।

शतावरी चूर्ण चिरयौवन, दीर्घायुष्य प्रदायक व मातृ-दुग्धवर्धक

यह बल, वीर्य व बुद्धि वर्धक, चिरयौवन व दीर्घायुष्य देनेवाली, वजन बढ़ाने में मददरूप, नेत्र एवं हृदय के लिए हितकर तथा रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ानेवाली श्रेष्ठ औषधि है। इसका नियमित सेवन सामान्य कमजोरी, दुर्बलता, वीर्य-संबंधी बीमारियों, अत्यधिक मासिक स्राव, वंध्यत्व आदि रोगों में लाभदायी है। इसके सेवन से प्रसूति के बाद दूध खुलकर आता है।



वायु व शूल शामक रामबाण बूटी

यह बूटी पेट के विकार जैसे - अफरा, अजीर्ण, मंदाग्नि, पेटदर्द, कब्जियत आदि में अत्यंत लाभदायी है।



पुनर्नवा मूल (टेबलेट)

यह हृदयरोग व गुर्दों (kidneys) के विकारों - पथरी, किडनी फेल्यर, सूजन आदि में विशेष लाभ करती है। पुनर्नवा यकृत (liver) का कार्य सुधारकर रक्त की वृद्धि करती है।



श्रेष्ठ रसायन आँवला पाउडर बल, आयु-आरोग्य व वीर्य वर्धक

इसके नियमित सेवन से शरीर की कार्य-प्रणालियाँ उत्तम ढंग से कार्य करती हैं, जिससे शरीर पुष्ट व बलवान बनता है। यह यौवन को स्थिर रखनेवाली, वीर्यवर्धक, नेत्रों के लिए हितकर, स्मृति-बुद्धिवर्धक, त्वचा के रंग में निखार लानेवाली तथा हड्डियों, दाँतों व बालों को मजबूत बनानेवाली एवं रोगप्रतिकारक शक्तिवर्धक महत्त्वपूर्ण औषधि है।

यह भूख न लगना, अरुचि, कब्ज, खून की कमी, स्वप्नदोष तथा वीर्य-संबंधी रोगों में लाभप्रद है।

उपरोक्त सामग्री आप अपने नजदीकी संत श्री आशारामजी आश्रम या समिति के सेवाकेन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं। अन्य उत्पादों व सभीके विस्तृत लाभ आदि की जानकारी के लिए एवं घर बैठे सामग्री प्राप्त करने हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramstore.com रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगवाने हेतु सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७३०, ई-मेल : contact@ashramstore.com

युवा सेवा संघ द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर देशभक्ति यात्राएँ



काँवरियों की सेवा



विद्यार्थियों में स्कूल बैग, नोटबुक व सत्साहित्य वितरण



RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2018-20
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2020)
Licence to Post Without Pre-payment.
WPP No. 08/18-20
(Issued by CPMG UK, valid upto 31-12-2020)
Posting at Dehradun G.P.O. between
1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st Sep 2018

ऋषि प्रसाद सम्मेलन व अभियान



स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।